कोई मुझे समझाए

कहने को तो दिल की आरजू बहुत कुछ है कह जाती

हर घड़ी एक नए दृशय से अगवा है कराती

चलती भटकती कुछ कहने की आस में

नए परिदृशय से हर घड़ी ये मिलती

नए मनसूबे नयी दिशा

कहीं न कहीं यह खोता निशा

लोगों की पुकार कुछ का तिरसकार

जागती वो मेरी आरजू

कहते जो वो है भटक जाता

कोई मुझे समझाए

सावन यों ही खिलता जाए